इस्तिमा से खरीदा चमड़े का कोट

नरेंद्र गौड़

इसे उतरन मत कहिए
भोपाल के इस्तिमा से
तुरपाई के रेट से भी बहुत सस्ता
यह नरम मुलायम कोट नहीं
एक जानवर के बलिदान का
करुण इतिहास खरीदा है मैंने

भीतर लगी चिप्पी के स्टैंडर्ड के
मुताल्लिक इसे न्यूयार्क के
नामीगिरामी दर्जी ने
मेरी ही तरह की कद काठी के
भाई के लिए सिया था

शायद भाई को पता था
आगे चलकर इसे किसी और को भी
पहिनना है इसीलिए उसने
बड़े जतन से पहिना और

tadbhav.com home page
● **ctrl +** (Zoom) ● **ctrl -** (ZOOM OUT) ● **ctrl 0** (FIT TO PAGE)

मेरे लिए ज्यों का त्यों धर दीना
जानवर की खाल से बना
यह नरम मुलायम कोट

अपने कस्बे की सुनसान ठंडी
बेजान सड़कों पर
कोट की जेबों में हाथ डाले
एक बर्फीले जंगल की स्मृति के साथ
उस परम त्यागी भाई को
बड़ी शिद्दत से याद
करते हुए गुजरता हूं
यही कि उसने मुझ गरीब के बहाने
तीसरी दुनिया के तमाम बाशिंदों को
पूस की ठिठुरन भरी सर्द रातों में
बेमौत मरने से बचाया

उस भाई की तीसरी चौथी
छठी सातवीं बीवी का भी
कम शुक्रगुजार नहीं
जिसने इस कोट की बांहों पर
अनगिनत बार सिर रखा
बुरे दिनों में अपने आंसुओं से भिंगोया
एक हताश और थके हुए
आदमी की पदचाप को
कोट के जर्रे जर्रे में सुनता हूं

मैं अपने बाप जमाने नहीं गया और
हैसियत के साथ औकात पर भी
पक्का भरोसा है
भविष्य में भी हर्गिज नहीं जा पाऊंगा
लेकिन इस कोट की माबदौलत कितनी
सुगम हो गयी इतनी कि दिन
दहाड़े भी की जा सकती है ऊंघते
हिचकोले खाती बसों
यहां तक कि दफ्तर में बाबूगिरी करते हुए
बॉस की नजरें बचा
फोकट में अमेरिका की यात्रा

tadbhav.com home page
● ctrl + (Zoom) ● ctrl - (ZOOM OUT) ● ctrl 0 (FIT TO PAGE)

कई बार कुलांचे मारता हुआ
जानवर होता हूं
कोट पहिने अपनी बेगम के साथ
पीछे पीछे दौड़ा भागी करते
अपने बच्चों कच्चों के साथ
कोट की खातिर किसी दिन
मार दिये जाने से बेखबर
बारहसिंगा होता हूं
मुझे कुनबे के साथ जंगल का
राजा कहिए जनाब!

कस्बा भी कहां होता है कस्बा
अकेले कोट की वजह से
यह शाजापुर
तीसरी दुनिया की तमाम दिक्कतें लिए
अपने ही में फटेहाल
बमों के धमाके चौंतरफा हिंसा
मारकाट से लबरेज!!
मैं अपने कस्बे को बजरिए कोट
बेहद गुस्से में पाता हूं

बरसों से डामरीकरण गिट्टीकरण के
इस वोट से उस वोट के झांसों में
दिन काट रही
भ्रष्टाचार के दलदल से भरी
सड़कों से गुजरते हुए मैं ग्लोबलाइजेशन
अमेरिकी साम्राज्यवाद को
जी भर गालियां देता हूं

इस कोट के बहाने गुलामी की
जंजीरों से जकड़े असंख्य नीग्रो याद आते हैं
अब्राहम लिंकन भी कम याद नहीं आते
वालेस स्टीवेंस, सिल्वीया प्लाथ
राबर्ट फास्ट, एमिला डिकेंस, वाल्ट विटमेन
आते हैं कोट के बहाने याद

अपने भाई को याद कर
विरासत में छोड़ जाऊंगा

tadbhav.com home page
● ctrl + (Zoom) ● ctrl - (ZOOM OUT) ● ctrl 0 (FIT TO PAGE)

जानवर की खाल का इसे मत कहें
मानवीय करुणा दया ममता
बलिदान आदि इत्यादि शब्दावली
लजा जाए ऐसा काला नरम गरम
ठंड पूछे किधर कहां से घुसूं?
ऐसा यह अमेरिकी कोट!